हिन्दू-संगठन एवं हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना हेतु कार्यरत

हिन्दू जनजागृति समिति

पंजीयन क्र. : 1540/।-634, १२.११.२००२, फोंडा, गोवा.

चल-दूरभाष
९३२६१०३२७८
इ-मेल
contact@HinduJagruti.org
जालस्थल (वेबसाइट)
www.HinduJagruti.org

पंजीकृत कार्यालय : 'मधु स्मृति', प्रथम तल, बैठक सभागृह, घर क्र. ४५७, सत्यनारायण मन्दिरके निकट, ढवळी, फोंडा, गोवा ४०३ ४०१.

।। जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रम् ।।

दिनांक : १४ .२.२०१५

प्रति,

श्रीमती इंदू जैन,

अध्यक्ष, भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार समिती

१८, इनस्टिट्यूशनल एरिया, नवी देहली - ११० ००३

(ई मेल - jnanpith@satyam.net.in)

महोदया,

विषय - हिंदुओंके देवी-देवताओं पर टिप्पणी, अश्लील लेखन तथा विकृत इतिहास लिखनेवाले भालचंद्र नेमाडे को दिया गया ज्ञानपीठ पुरस्कार निरस्त करें !

लेखनद्वारा निरंतर हिंदू धर्म, हिंदुत्व, ब्राह्मणों पर विषवमन करनेवाले, देशभक्त नागरिकों को 'बिगडे हुए' संबोधित करनेवाले, हिंदुओं के परमश्रद्धेय भगवान श्रीकृष्ण, प्रभु श्रीराम पर अश्लील टिप्पणी कर स्वयं को धन्य समझनेवाले भालचंद्र नेमाडे का ज्ञानपीठ पुरस्कार हेतु चयन किया गया । जिन लोगों ने लेखन द्वारा हिंदुत्व को निशाना बनाने का काम कर बार-बार हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं को आहत किया, उन लोगों को ज्ञानपीठ जैसे सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित करना, इससे अधिक हिंदुओं का तिरस्कार क्या होगा ? केवल हिंदूद्वेष इस एकमात्र मापदंड पर ही नेमाडे के पुरस्कार को विरोध नहीं है, अपितु समाज को पथभ्रष्ट करनेवाले व्यक्ति का सम्मान करने से समाज में भी अनुचित संदेश जाता है । वैसा न हो, इसलिए नेमाडे के पुरस्कार का वैध मार्ग से विरोध करना, यह वास्तविक धर्मप्रेमियों का कर्तव्य ही है । इसी भूमिका से हम नेमाडे को दिए जानेवाले ज्ञानपीठ पुरस्कार का निषेध करते हैं ।

*** इस विषय में हम कुछ बातों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहेंगे ...**

१. यह पुरस्कार 'साहित्यिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में कार्य करनेवाले ऐसे व्यक्तित्त्व को दिया जाता है जिसका कार्य राष्ट्रीय अथवा आंतरराष्ट्रीय होना चाहिए', इस विचार से प्रदान किया जाता है; परंतु प्रत्यक्ष में नेमाडे का व्यक्तित्त्व, उनके लेखन से पूर्णतः विपरीत है । नेमाडे के लेखन से अनेक हिंदुओं की धार्मिक भावना आहत हुई है और उनका अश्लील लेखन भारतीय संस्कृति को ठेस पहुंचाता है । अतएव नेमाडे को यह पुरस्कार देना पुरस्कार के नियमों के विपरीत होगा । यह पुरस्कार घोषित करते समय भाषा के विशेषज्ञ

इसका अध्ययन करते हैं; परंतु नेमाडे को पुरस्कार मिलनेपर उनकी भाषा में, साहित्य में ऐसा क्या था, जिस कारण उन्हें यह पुरस्कार दिया गया ? इस विषय में प्रश्नचिन्ह निर्माण होता है । पुरस्कार देनेके पूर्व उस पर चिंतन किया जाता है, ऐसा कहा गया है; परंतु नेमाडे के विषय में ऐसा दिखाई नहीं देता ।

२. भारतीय साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान देनेवालों को यह पुरस्कार दिया जाता है । नेमाडे ने भारतीय साहित्य में ऐसा कौनसा योगदान दिया है, जिसके लिए उन्हें यह पुरस्कार दिया जाए । उनका संपूर्ण लेखन अत्यंत औसत श्रेणी का है ।

३. इस समय पुरस्कार के रूप में 'वाग्देवी की मूर्ति' दी जाती है, जो माता सरस्वती का ही एक रूप है । जिस नेमाडे ने हिंदुओं के देवताओंपर अत्यंत निकृष्ट स्तर की टिप्पणी की है; किंबहुना नेमाडे भगवान को मानते हैं भी कि नहीं, इसी पर प्रश्नचिन्ह है । अतएव देवी-देवताओं पर टिप्पणी करनेवाले नेमाडे को देवी की मूर्ति देना क्या पुरस्कार का अपमान करना ही नहीं है ?

४. भारत में आज हिंदू धर्म, संस्कृति, इतिहास के विरोध में लिखनेवालों को पुरस्कार देनेका चलन बन गया है । विदेश में अपने इतिहासपर टिप्पणी करनेवालों को कोई स्थान नहीं दिया जाता, यहां मात्र भारतीयों के इतिहास की आलोचना करनेवालों को ही पुरस्कार दिया जाता है, यह आश्चर्यजनक नहीं; खेदजनक है । जो व्यक्ति भारत का इतिहास ही नहीं मानता, उसे पुरस्कार देना एक प्रकार से भारतीय इतिहास का ही अपमान करना है ।

५. मूलतः नेमाडे पहले किसी भी पुरस्कार पर ही टिप्पणी करते थे । इसीके साथ नेमाडे ने उन साहित्यिकों और लेखकों पर भी टिपण्णी की है, जिन्हे पूर्व में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला हैं ।

अतएव जिसका पुरस्कार पर ही विश्वास नहीं, उसे पुरस्कार देना क्या ज्ञानपीठ के नीति-नियमों के विरोधमें नहीं है ? साथ ही अन्य पुरस्कृतों पर टिप्पणी कर नेमाडे ने 'केवल जो मैं ही सच्चा', यह दिखाने का प्रयास किया है ।.

*** * भालचंद्र नेमाडे की विकृत मानसिकता की ओर ध्यान आकर्षीत करने हेतु नेमाडे के लेखन में आए आक्षेपजनक सूत्र, तथा उनके द्वारा किए विवादित वक्तव्यों की सूची दे रहे हैं....**

१. महाभारत के वास्तविक नायक कौरव थे । उन्होंने ही महाभारत किया ।

२. दुर्योधन आधुनिकतावादी था । वह जातिभेद नहीं मानता था । ब्राह्मण और हिंदुत्व को सामने रखनेवालों ने हिंदू धर्म का नाश किया ।

३. पांडवों ने महाभारत 'हायजैक' किया । कृष्ण को नायक बनाया । कृष्ण तो साधारण 'ड्रायव्हर' था । कृष्ण व्यभिचारी था ।

४. मलिक अंबर 'महाराष्ट्र धर्म' स्थापित करनेवाला पहला आदमी था ! हम रामदास का नाम लेते हैं; पर वह सच नहीं है । मलिक अंबरने ही शहाजी इत्यादि जैसे मराठो को सर्वप्रथम एकत्र किया और उससे मराठा धर्म आगे आया । आज हम हिंदू संस्कृति जी रहे हैं, तब भी बौद्ध धर्मका भी पालन कर रहे हैं । हमारे वारकरी संप्रदायके सारे सिद्धांत बौद्ध धर्म से ही लिए गए हैं ।

५. बाबासाहेब पुरंदरे के मुंह से दौलत खान, मुरवेद के नाम कभी नहीं आते । शिवाजी महाराज का केवल हिंदुत्ववादी के रूप में प्रचार किया गया इसलिए इतिहासकारों द्वारा रची गई टेढी-मेढी दीवार अब उनपर ही ढह रही है । इन बातों को दूर किए बिना देश महासत्ता नहीं बनेगा ।

६. हिंदुओं को समाप्त करनेकी भाषा करनेवाले ओवैसी का समर्थन करते हुए नेमाडे ने कहा, ''ओवैसी के वक्तव्य का कारण है स्वातंत्र्यवीर सावरकर, हिंदू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का हिंदुत्ववाद और इसका वास्तविक संकट मराठी को ही है । इन्हीं संगठनों ने देश में मुसलमानद्वेष फैलाया । फिर किसी मुसलमानने इन हिंदुत्ववादियों से प्रतिशोध लिया, तो उसमें गलत क्या है ?''

७. 'एकनिष्ठा का अर्थ दूसरे का उत्पीडन करना नहीं है, जैसे रामने सीता का उत्पीडन किया और स्वयं को 'अवतारी' भी कहला लिया । अतएव समाजवादी स्त्रियों को प्रथम बाबरी मस्जिद के पास राममंदिर बनाने का विरोध करना चाहिए कि 'हमें जलानेवाले और जंगल भेजनेवाले का मंदिर नहीं चाहिए ।'

८. '२०-२२ वर्षों तक हमारे बच्चे 'असली' रहते हैं । ये बच्चे २५ वर्ष के हो जाए, तो उन्हें 'राष्ट्रप्रेम', 'तिरंगा झंडा', 'चांद-तारा' सिखाया जाता है । फिर धीरे-धीरे वे 'नागरिक' बनने लगते हैं; आगे वे बिगड जाते हैं । फिर उन्हें 'वन्दे मातरम्' वगैरे गाना पडता है । फिर दूसरों से द्वेष करते हैं, यह भी कहना पडता है । इस प्रकार २५-३० तक वे बच्चे पूर्ण मुर्ख बन जाते हैं । हमारे 'पांडुरंग सांगवीकर' को (नेमाडे 'कोसला' उपन्यास का मुख्य पात्र) २५ वर्ष की आयु में ही पता चला । इसलिए उसने तय किया, 'ये कहेंगे वैसा मैं करूंगा, मुझमें संन्यासी बनने का धैर्य नहीं, आत्महत्या करना आसान नहीं; फिर 'सिटिझन' बनना आसान है, 'वन्दे मातरम्' गाना आसान है, दूसरे देश से द्वेष करना सबसे आसान है ।'

यह कुछ गिने-चुने उदाहरण हैं; नेमाडे का लेखन केवल हिंदू धर्म के विरुद्ध था, ऐसा नहीं था अपितु वह अश्लील, महिलाओं का अनादर करनेवाला तथा निकृष्ट स्तर का भी था । इन्हीं नेमाडे के विरोधमें नाशिक में वारकरियों ने जिलाधिकारी कार्यालयके सामने टाळ-मृदंग के बीच आंदोलन भी किया था । अतएव ज्ञानपीठ पुरस्कार देनेवाला व्यवस्थापकीय मंडल नेमाडेको दिए जानेवाले पुरस्कार पर पुनर्विचार करे, ऐसी मांग हम समस्त साहित्यप्रेमी, इतिहासप्रेमी तथा हिंदुओं की ओर से कर रहे हैं । साथ ही नेमाडे को पुरस्कार देने; हेतु जो समिति गठित की गई थी । उसके सभी सदस्यों के नाम घोषित किए जाएं, ऐसी मांग हम करते हैं ।

आपका नम्र ,

(शिवाजी वटकर, दू.क्र. ०९३२२५३३५९५)

हिंदु जनजागृती समिती के लिए